

# श्री जैनधर्मप्रकाश.

JAINA DHARMA PRAKASHA.

दादरा।

जनगणना रमायानी, गानकरो मनिभाय;  
रसगाने रसगान थे, वाचा नैनप्रकाश.

लोकानुकूलकृष्णकृष्णकृष्णकृष्णकृष्णकृष्णकृष्ण

पूर्वांड दग्धु, शक १८१५ भाद्रा शुक्ल १५ संवत् १८५० अंक ११ ने

श्री जैनघर्मी जयति.

तेवा पुरुषोयी आ पृथ्वी रत्न वती हो?

शार्दूलविकीर्तिपुराम्.

जप्ती रामर वृत्त दृष्टि विग्राम निषेद्या करे हरे;

न तेवा परमात्मा भीष्म गदा दृष्टिर्था पीढ़िमहे;

वामर वृत्त विद्यारता द्विष्ठानं उत्साद अर्जि धरी;

जप्ती रत्नरती धरा सद्ब्रह्म आ ते धर्मि रत्ने करी

१\*

वामरा रामर गदाविकार लक्ष्मा शिवि धृह ने गरे;

भौति तो नहि ने भूमा वर्यनो वल्लभान्ता ता थो;

जोने हैं सुख गद नियं लम्हनो नर्तो छागे करी;

जप्ती रत्नरती धरा सद्ब्रह्म आ ते धर्मि रत्ने करी.

२

हैरी केद अद्य वृत्त पर्यनी तेवा न छर्या उदे;

पर्यु वृत्त यतो द्वारा रत्न अते तेवी हया ने धरे;

आ जप्ती रत्नरती दृष्टि द्वीपानो अनुकरे रथुत्र आणुनियात निवेद  
प्राप्तिर्वा आद नत इत्येवा ५.

४७०

## श्री केवल मुमुक्षु प्रधान.

राणे एवं भट वित्तमां गतुरु के सदसे ते आयती;  
बनाश्चा रत्नाली धरा चक्र आ ते धर्मि रत्ने करी।  
के देखा परम्परी कहि नडी विंग दुर्घट्टि धरे;  
चायाते विज गात उड़त समाता सहजुद्धो आयते;  
नने के विज नारी साथ सूनारी अनेक निने करी;  
बनाश्चा रत्नाली धरा चक्र आ ते धर्मि रत्ने करी,  
दंडाने आति गोपनीय यनती के विज नारी धरे;  
देहो के नान्द परिषद तथा अक्षेष्य तेमा करे;  
राणे चर्चि प्रभाण्युरा वतधरी पञ्चाण्यु ते उच्चरी;  
बनाश्चा रत्नाली धरा चक्र आ ते धर्मि रत्ने करी।  
बनाश्चा किंव भारगाण्यु के भ्रत धरे बर्खूङ गेडे रहा;  
धर्मि केशरि तुका ते ना राणे अक्षयकी के कहा;  
राणे विच अक्षर धर्मि चशिगां के ओळ निष्ठा धरी;  
बनाश्चा रत्नाली धरा चक्र आ ते धर्मियते करी।  
भाक्षा भक्ष्य विचारने गनामरे ओजापनोगे करी;  
राणी ते गत आचरे विचगां श्री धर्म विने धरी;  
शुद्धानार के सामने धरना न राह निने करी।  
बनाश्चा रत्नाली धरा चक्र आ ते धर्मियते करी.  
किंव के दृष्टि वक्त देखति आने की आते रहा;  
राणे शुद्धानार शुद्धानार गनामी के न राह नी कहा;  
किंव दृष्टि आने के दृष्टि राह के न राह नी कहा;  
बनाश्चा रत्नाली धरा चक्र आ ते धर्मि रत्ने करी।

२०१३.

## प्रत्तिक्रमण.

आदर्शमान गृह १३५ बेशी।

हो गाइक प्रतिक्रमण ते देख वर्णनाते सर्व, विषय प्रश्न के के  
उ-के परा राई प्रतिक्रमण देखने रत्नाली शुद्धि विषय नाम कर्त्ता

## प्रतिक्षमाणः

१७१

प्रतिक्षमाणु इरवातुं शु अरथु ? तेनो भूतर-साधु महग आने आहर अहि  
आरनी. निशुद्धिने आटे निरतर हित अने रत्नीनी प्राने प्रतिक्षमाणु इर-  
वाता छनां पथु पक्ष, यतुमासि अने सर्वत्सरनाहमतो विष्णु विजेय प्रकारे  
प्रतिक्षमाणु करे छे ते वित्तीकरणु इरवाने अर्थ-देवकी राई प्रतिक्षगलु क-  
रवाता छनां पथु रेडेव होएनु निराशय इरवाने अर्थे "संगम्बन्धु". तेग तेजा-  
दिक्षां शीर चांडकांने माझा छनां पथु धा. विकेपा अने भूषणुदिक्ष  
करीने नियोगी शोभित करे छे तेग आदी पथु साधु विकेप शुद्धि करे  
छे शेग नागानु. ऐज वात दृष्टांतां सिद्ध करे छे कु—

जह गेहं पडिवसांपि, सोहयं तहवि परुखतंघीमु ।  
सोहिल्लङ्ग संविसेसं, एवं इहयंपि नायवं ॥ ३ ॥

"तेग धर प्रतिदिवमे साई इरवामां आवे छे तेग पथु पक्ष मधिने  
विष्णु शेष्वे पर्वादिको विष्णु विशेष प्रकारे—यारे णाञ्चुर्थी खुशेषोयशेथी साई  
इरवामां आवे छे तेम आदी पथु नागी तेवु." ।

वाणी निल प्रतिक्षमाणु इरवातां टोर्डक आतियार विस्मृत गम्भ गमेव होए,  
कहि सांगेंवा देवा पथु वायादिकारी युझ संगढ प्रतिक्षम्भोगाने होय अथवा  
प्रतिक्षमाणी गवतारी समाई प्रकारे पडिकेवत होय तेवा आतियारने प-  
उक्षगवा आटे भाक्षिकादिक प्रतिक्षमाण इरवानु छे.

पाहिज प्रतिक्षमाणगां प्रारम्भ हैविक प्रतिक्षमाणी शेग प्रारम्भी ते  
प्रतिक्षमाण गवा (तांदीता अव) अपार्वे केवा प्रविष विष्णु इरवी. लार पथी  
महाकारी अमालालांगाऽ शी अनायापाल अनी देवसियं आतेप्रायु  
प्रतिक्षमाण भूच्छाक्षरेण्य विदिसद् वायवन् पार्वती मुहुर्मती पदिते-  
हु? तेम कडी आदेश गायतीन्द्रु दपती अदिलेदीने वांदवा होय पठी  
वाया प्रवान अवा राही अनायान राष्ट्रां ले शेग वरशाववाने गाठे संगुद  
वे शुद्धादिक तेगने अगावां साई संबुद्धा लामणें अम्भुदिओ अमिं-  
त्तर वस्त्रिवर्ण स्त्रामेउं शेग कडी शी युझ आहि त्रणुने अथवा ऐ शेष रहे  
ता देवा तो पांचने अनुको अगावां. आक्षिक शूती वृत्तिगां संसुद्ध  
द्वारायावाने प्रवताने कर्तु छे—“वर्षन्यरी भादिकगां वाय अथवा आंय, अने  
विष्णुनी वायत्यरी प्रतिक्षमाणगां सहा अगांत तवा उद्दृश्यी नव्ये द्वावानां  
सों अगांती.”

पद्धि विमा थाठने मध्याकारेण् संहितादु लगवन् परिषयं  
 आसोम्येति, मध्यां आसायेति केवे परमायेऽप्पाऽर्थादि सत् क-  
 हीने पद्धि संक्षेप्या अगवा विस्तार्या पाद्धिक अतिचार आगोते. पद्धि  
 सम्बन्धि परिषयं० मध्यादि यत् कठीने विपवासादि ३५ प्राप्तिन आ-  
 गीकार करे. तार पद्धि वांछण् इने प्रत्येक आगचा देवाने गाए प्रथग,  
 युर अगवा घीरन क्लोष मुनि लेग ते विमा यम्हने कनिष्ठ मुनि प्रते नाग  
 अदयु पूर्वं अगावे. पाद्धिक यत्तनी वर्णिणां जे प्रगाङे टोडेकु छे. शिंग  
 पूछे छे के-शुं युर उहीने अगावे० तेवे जितर आपे छे क दा. अन्य  
 यतिगोने नव्याववा गाए युर प्रथग अगावे ते ओग जाणुन्या गा टेके  
 आ गदाता-युर गदारान् आडंकर मुक्ताने दृश्यती तेगद वानी अ-  
 क्षुयित अगावे छे तो पद्धि आपणे० तो अमावतुन लोभजे. वाही  
 घीरन युर समीपे रहेनारा नवति आदिके करीने अत्यंत विनग ओवा मुनि  
 पलु ओम न चिंताने के आ निया ऐ अने अगे उत्तम छोबे जोउवा गाए  
 युर प्रथग अगावे छे. तार पद्धि शेष मुनिएा हीका पर्यायना अनुकूल मुनाला  
 ऐ बाडी रहे लां सुधी अगावे. तार पद्धि वांछण् इनो ॥२८॥  
 आसेध्यं पडिकंता, मध्याकारेण् संहितादु लगवन् परिषयं  
 पाद्धिकगावेह. मध्यां ओम कठी करेगवते तथा देवसिंहा आसोवा ओ-  
 ली अगावगण् इनो युर गदारान् अगवा युर्गो शादेश आगेत गुनि  
 पाद्धिकसूत्र ओवे अने ओग संवेदोत्तर्यां रियत थाठने सांगें।

पाद्धिकसूत्र कठी रखा पद्धि मुम्हेवया लगवन्ध जे रहुनि जेत्तो  
 ऐरीने पूर्व निषि (देवसिंह प्रतिकर्मण् सूत्रानी विषि) पूर्वक पाद्धिक प्रति-  
 कर्मण्यसूत्र (अगावगुना) साधु जेवे अने शापाक वंदीनासन जेवे देष गा-  
 याजो तस्व वेस्मस्य० था विमा यम्हने जेवे. पद्धि उजेगेवनि, ईश्वर-  
 निहानि ब्रह्मरेत्यां अने तस्व जिनरी अनुशय० जेवाने परिषय॑ इर्हा इतां  
 पलु अशुद्ध रहेवा अविगारेनी शुद्धिन आर्ये तार वेगवस चितननृप  
 द्योत्तर्यां करेवे. पारी प्रगट दोगवसा कठीने मुदारानो पाद्धिकी. वांछण्  
 ध्यने मध्यां० समाप्त खामणीं अमर्षीओगि अभिमतर परिषयं सामेउ  
 कठीने अगावे. शिंग पद्धि करे के क-पूर्वी सागान्यया तथा विदायी पर्य

१ द्योत्तर्यां द्योत्तर्यां रियत शान्तुं प्रवर्तन नशी.

## प्रतिष्ठभाष्य.

१७३

पाक्षिक आगराध अगामेल छे ते छतां वाणी द्वीने आ श्रीछन्नार शा भाटे अगावदा ? ओत्तर-छेवटे करेका कागोत्सर्गंगां स्थित रखा सता युवं अ-क्षम भावाते कांठक अपराधादि संभार्या होय तेने अगावदा भाटे द्वीने क्षामण्डुक करे अगवा अहो सर्वया पाक्षिक प्रतिष्ठभाष्यी सगामि याप छे तेथी प्रगगना क्षामण्डुक पधी कांठ पथु अपतीतडारी घेचु होय ते वित्य उक्ता यप होय तो ते अहो अगावदानु छे. तेमन्जे प्रभावे उद्दाती निधि छे ते कर्मक्षयनी हेतु छे. अने ते रक्षगते त्रील वैद्यना औपाप सदा अतावेली छे. त्रील वैद्यन् औपाप नेम, रोग सते रोगने द्वेष अने रोग न होना तो युशी करे तेव आ विधि पथ होय होय होते तेसी नाय करे अने होप न होय तो वित्य वृद्धि विभेरे मुष्टी करे. तेथी ते हस्ता गोअग्न छे. भाटे अहो यीजो कांठ विचार न करवो. बागपती आग्नान प्रगाण्डु करवी.

लार पधी आर अगासगाण्डु समाचारीमां डेवु विधि पूर्वक आर पाक्षिक आगाण्डा आगे. तेगां प्रयग, राजनो पूर्ण भाष्यवक्षा<sup>१</sup>. अतिक्षमे राने गंगालीक निगिसे याकु गान आगां छे अने क्षेवामां आने छे के ‘आप्तित लगानाणा शेवा तगारो आरी राते काळा व्यतिक्षमो’. आप्ती-गो पापु अे प्रभावेन्न व्यतिक्षेवा’ जे प्रगावे आगार्येतो पाक्षिक निगो-पगार इच्छागी समासमणोपिगंतमें० ईत्यादि प्रथम क्षामण्डुक सूत्राते साहु तथास्थितप्रये करे.

यीजे आगाणे शैत्यरान्त अने साहुप्रदान निवेदन इत्याने ईच्छता सता इच्छामि स्त्रमासमणो पुर्विं० ईत्यादि पाइ ऐसे.

त्रीने आगाणे खोने गुरु प्रत्ये निवेदन इत्या भाटे इच्छामि स्त्र-मासमणो अस्मुद्दिग्दोहं तुम्पत्तहं० ईत्यादि पाइ ऐसे.

वेदे आगाणे के शिद्धा अद्यु करा ते संगती अनुयदते अहु आ-नो रतो इच्छामि स्त्रमासमणो अहमपूज्वाहं० ईत्यादि पाइ ऐसे.

आ चारे पाक्षिक क्षामणाणां होके क्षामणाणी प्राते तुम्मेहि समं१ अहमति वंदामि नेह्याह २ आयरिय संतियं३ निश्चारग पारम्महोह ४ ए आर वगो। पत्तेके यशुगदारान् ऐसे आने शिष्य ईच्छा५ ईच्छा५ जेव ईच्छा५ शतनी प्राते इच्छागा अणुसङ्गि अभ ऐसे. (अहो पाक्षिक नि-शेष निधि पूर्ण याप छे.)

१ पर्व निश्चा.

४७४

## श्री कैतकर्म प्रकाश.

सार पढ़ी हैवसिक प्रतिकगमण मन्त्र (वाहिना चुड़ा) नी पढ़ी देखना वांछया देय अने आज्ञानी सर्वे विषि हैवसिक प्रतिकगमण प्रगाणे संपूर्ण करे तेमां गोटवु विशेष छे-छुतहेताने पादिक चुननी प्राप्ते संगारेल हो-पाया-मूरुदेवया भगवद्गी० जो रुति क्षेत्र देखाया तेना क्षेत्रात्मजी रुग्ने मुक्तनदेवता नो क्षेत्रसर्वे करे. क्षेत्र हेतवानी निरतरती रमृतिगां चुननकुं क्षेत्रांनंतपालुं हेतुतथा ततारी तो चुनन देवतानी पाणु रमृति दररोन याम छे तो पाणु पर्व विसे तेवुं विशेष चुनगान करवा गाए साक्षात् तेगनो क्षेत्रसर्वे करे. तनने रथान्दे अजीतशांति स्तोत्र ऐवे अनो १ बधु थां-तिं रथान्दे चुदुत्तरांति ऐवे.

आ पादिक प्रतिकगमणां पाणु पञ्चविन आचारनी विशुद्धि तेमां क्षेत्रा चुनाने अनुसारे नाणी केवी. ते आ प्रगाणे-मानादि चुश्चाननी, प्रतिकगमण देखाया वांदाया अने संज्ञुक आभानुक विग्रेश्या नानाचारनी आर लोगसना क्षेत्रात्मां पाणी प्रगत चुम्पिंश्चित राय क्षेत्रानुं कराने दर्शना चारनी, अतिचारनी आवेगना-प्रतोक आगण्डा-नानु अने गोकुं पादिकसुव अने रागामा द्वागण्डा विग्रेश्या चारिचाचारनी, चन्द्रं तपनी प्रति गति अने आर लोगसना क्षेत्रात्मादिकाने लाल आपांतर तपाचारनी, अने ए चरी प्रकारके चरणदृ आयन उत्तरार्द्धी नीपोचारनी विशुद्धि नाणुता. आ प्रगाणे चातुर्गासिक अने सांततसरिक प्रतिकगमणां पाणु समनवुं.

मानादि आचारना सदों ने उपर अताचा ले तेथी बुद्धी दीते व्यां पाठ लेय लां ते ते अन्धनी चमाचारी निरोपे प्रगाण नाणु.

### कृति पादिक प्रतिकगमण कुम विषि.

जैगारी अनो रात्तसरी प्रतिकगमणों पाणु क्षेत्र उपर प्रगाणेन ज-एनो. मात्र नागमां उडेकार समाजों गोटवे लां लां भजिण्यां क्षे-वानुं देव लां लां चौगासिअं अने भावत्तरारक्षां क्षेत्रुं. क्षेत्रसर्वे चौमारी प्रतिकगमणां तीश लोगसनो अने संवचनारी प्रतिकगमणां चां ज्ञाश लोगसनो. उपरांत गंगापाइर्वे ओक नसार सदिन नाण्यों. अमानु आदिक जैगारीकानो ने ऐ शेष रहेता देय तो चुर्णिकि पांचने अने संगतसरीगां चानने नाण्या.

उपर प्रगाणे संस्कृतकाणां प्राप्तंगन प्रतिकगमणी चौगासिअं ज-एन-

---

१ आ व्यां क्षेत्रां वांच तां. प्राप्तंगन चौगासी लंगेत्र छे.

## विश्वासधात.

१७५

की चूम्हिकारे क्रेस सामाजारी क्रान्ति क्रान्ति चयनके युद्धी गीते देखाय ३  
परंतु तेम देणाने मोद न करवो क्रमके सामाजारीहु विवित पांडु ४.

धृति चारुर्मासिक सांवत्सरिक प्रतिक्षमल्लुक्तम निवि.

वापस्था

## विश्वासधात

क्रान्ति प्राणी आपश्चा विश्वास करे तेने विश्वास अद्यया पछी तेने  
मान करवो ते समान शीम्बुं क्रान्ति उम्ब पाप नथी। शास्त्रारे यंदाण छे  
प्रकारना कला छे. जेक नलि यंदाण. शील कम यंदाण. कर्म यंदाणह  
चार प्रकार कला छे. १ ऐसी साक्षी पूरनार, २ अषुकाण सुंसी रीस रा-  
भनार (होमी), ३ विश्वासधाति आगे ४ कृष्णधी. आ चारेमां विश्वासधाति  
नी मुख्यता छे. कम यंदाणने नलि यंदाण कराने पाप अनग कला छे.  
विश्वासधातिना संबंधमां जेक हक्कत लुभुता नेहु छे ते वांयक वर्गने ना-  
छुया गाए आ नाचे लाम्हु छे.

विश्वासा नामे नगरीमां नहं नामे राज्ञ होतो तेने चानुभती  
नामे परराणी आगे निक्षयपापा नामे पुन होतो. नामने राणीमी आये  
आसंत प्रीती हेताथी सचामां आवे लारे पापु तेने साये राये आगे  
पासे ऐसारे. एक धरी पापु तेनो संग छोडे नही ते राज्ञने जेक युद्ध  
नियान घटु श्रुत नामे प्रधान होतो तेजे एक कला विचार क्षों के “रा-  
ज्ञ आ काय अहुर आयुष्टरु करे छे आगे तेजी राजसचानुं गान रु-  
हेहुं नाही. आपश्चे राज्ञने कड़वुं लागे तेक्का गाए तेने कांध क्षेत्रा नाही  
परंतु गीहा गोत्ता देवता गनुणानी हेह निनाश पामे छे, गीहा गोत्ता यु-  
द्धी प्राणीमो पुन्य गंध निनाश पामे छे आगे गीहा गोत्ता गंधीयी रा-  
ज्ञ निनाश आगे छे गाए आरे राज्ञने आ आकार्यी पापा वरग्नाने क-  
हेहुं धटे छे” आ प्रभाले विचार क्षीरो तेजे गोप्य आपसे राज्ञने क्षम्बु  
के “ दे राज्ञरा आप निरंतर परराणीमो पासे ऐसारी राणो छे ते  
सहीत नाही. शुरु, अजिन, राज्ञ आगे खो ओ आर वेगला द्वा इह प्रा-  
प्ति करे के; तेवा तेग्ने निरंतर गणीय आगे राणीमे शेषन करवा नही  
परंतु गणा आगे तेमनुं शेषन करवु जेट्टे गोप्य आपसे ऐसा कड़वु

१७६

## कैवल वस्त्र प्रकाश.

करपि तमारे तेवुं गुज बोला निना चारालून न गोय तो तेवुं ३५ गीत-  
चलीने पासे राणो।” रामने तेनी वात क्षुग राणी अने ओड प्रभाव  
चितारा आसे शास्त्रिनुँ दृष्टि चितराव्युँ ओडदा तेवुं ऐताना शारदानंदन  
नामे शुद्धो ते ३५ हेआध्युँ तेवुं गुज खोलाली खोडलाई जनारामा गाए  
क्षुं के “हे रामेंद्र! आ उपरां शशीली आरी नाहिलां तिवाक क्षुं नरी  
अंगरेली आरी छे” आ वगन सांगलीने राम बाडु विश्वय पासेनो अने  
शारदानंदनी उपर गोलाली राष्ट्री साथे नाहुरुरे क्षुनो शक्तानो। तक्ता-  
ण घुलुकुत प्रधानी खोलालीने हुक्म क्षुं के “शारदानंदनी आरी  
नाणो। आ आपात इरीने विश्वारथा नदी अो गो मुख्यो पाणु नदी”  
प्रधान बाडु विश्वरामां पडो अने तक्ता शारदानंदनो लध्ने लांडी ब-  
द्दार नीक्लो। शारदानंदन भगु पश्चाताप करवा लागो के गें झागट शान-  
गाए चतुराई जाताली। प्रधाने निष्ठा क्षुं के “आ आपातां रामनी  
बाब थाय छे गाए आपाणे सादरे क्षुं नदी। साहस करवाली पाढण  
पश्वावुँ पहुँ छे “ओग विश्वाशीने शारदानंदनो गोलाना धरना बोंसरामां  
चुम पछे राख्यो।

ओड कदा राम्युन विजयगाण आएडो करवा गेयो। ते ओड सुआरती  
पाढण तो गारवा देउयो। देउतो देउतां बाडु भूग्नीकली गेयो जोरसे ओड आट  
वीरां आरी चडो। अचार चाणी गुंजु अने राती पडवा आरी ओरेवे व्याधां-  
दि आपहेयी वाय भग्नाने ओड आड उपर रातीवासो रहेगा ते चीडी गेयो।  
ते ग्रामर ओड वानर रहो तेचि भग्नाय वाणाजे तेने आपार आपो।  
इति कुरा आपा आरी चलेत भग्नाना अने क्षुं के “व चाय निंविष  
पाणे आरी रहे, शारदे हुं तो वार नगरे भग्नावी दहरा” अनेवे अ-  
रसी आरी रातना वार क्षुं अने राम्युन निंविषायी वानना जागामां;  
क्षुं, ओटवांग ओड वाय ते आड नीचे आपो अने वानरी प्रार्थना  
करवा लाग्यो के “दे वानर! आ भग्नाय गाड भक्ष छे गाए तुं तेने नीचे  
नापी हे, आपाणे ओड वनां रहेवारा धीमे अने भगु व्यातिपछे अधु-  
रहराया धानो, कारी भग्नाय विश्वास रामना गोज देवा नरी। ते स्वर्य  
सारे के तक्ता चिनाई आरी व्याय के अने विश्वासान करे के” आ प्र-  
भाणे वाये धर्षी राते समनव्यो पाण वानरे राम्युनां तच दाया नदी।  
वाधने क्षुं के “हुं विश्वासधात छूं शेवो नरी। आ गतुग गारे वि-

## संबोधसत्तरी.

१७७

“आसे निदावला थयो छ तो ताज टेवारी-विकासवाल करनाथी नहर नहर  
जरु गडे” आ प्रगांधे बारे तो ६८ विचारताणो जप्येहा लारे वाच भैः  
न थध ऐसी रुक्मा.

अधि रात्री वीती ओट्टे कुंवर जग्यो अने वानरने कहु के “तमे हवे  
सुखेथी आरा खोणां मुख जागो.” वानर सुतो अने निदावला थयो ओट्टे  
वाचे नाचेथी गर्नारन छ्यो अने कुंवरने कहु के “हे भनुष्य हु यो वानरो  
मुझो हे. ओट्टे तो गक्षाणु करी संतोष पारीने हु आदीथी गाययो नहर  
अने नहींतो तो भक्षणु करीना” छीनसत्ती राजपुत्र राज तेना ओक  
पचनथीन खुँहि भष्ट थयो अने वानरने पोताना खोणामांथी घडेली हिधो.  
“इसुर्कि खुरेहो आजी रीते विचास करे छ अने तेता खापनंधनो निवन  
कुल विचार करना तथी.”

वानर वाधना मुखमां पड्यो के तरतन तेहुं मुख छाडी छाप भा-  
रीने अदार नीक्को अने इहन करना भाग्यो. वाचे तो दसीने पुछ्यु के “  
तारो अचान थयो छतो हु आगाटे इहन करे छे ?” तेहुं कहु के “आनि  
यासवाती भनुष्यना शी गति यशो तो विचार आनवाथी हु इहन कड़ंहु  
पानी कहुं हुं के गारी धेडे ने पोतानी नातिने, कुणो, सभूदनो ओडी हु-  
द्धो शीतलनी साथे संबंध नोडीने राचे छे तेनी छनटे आ गतिन याच  
छे. हुं पशु ए भनुष्य, भारे ते अने धीतु शी, ते छतो भे विजतीप  
साथे धीती करी तो तेहुं अने आतुं हुण गज्युं.”

आ वाच अने वानर अने देव हता अने ते राजपुत्रनी परिक्षा  
करना सारे इय अहलीते आन्या हता. वानरे लांथी यादां रतो राजपुत्रने  
गाडो करी युक्तो जीट्टे ते “विशमेरा” “विशमेरा” खोलतो व-  
नांगां बाटकरा लागो.

आपूर्व

## संबोधसत्तरी.

अनुसन्धान पृष्ठ १५५ थी.

पृष्ठ ८८ गी गायाना शान्तिमां मूरा गायाने अनुसारे मांगने कि-

१७८

## श्री जैन धर्म प्रकाश।

पे निर्गोहीया उत्तोलनी उत्तमि क्षेत्री ले. वीक्षकार क्षेत्रे ले के "निर्गोह  
शम्भुं कर्त्तवे ऐक्षदी उत्तोलने पर्यु क्षेत्राय तेया चांसगां ऐक्षदी उत्तोलनी  
उत्तमि याप के अधीनाया नवीं ओग बन्दनुं. याप चाचागां स्वप्ना प्रगाथे  
निर्गोहीया उत्तोलनी उत्तमि याप तो चांसगो पर्यु अनांतक्षयपथ्यु प्राप्त या-  
य गाए ते विचारसा नेटुं के "

क्षेत्रानेक प्राप्तीयों गाही चंगनि निर्गोहना शारण्युयो प्राप्त तो  
निर्गोहि अद्यु क्षेत्र योग के तेनो बाग क्षेत्रे मे वापते तेव क्षेत्रानायी  
क्षेत्रहुं याप अधीना के तेनो विचार करता नाही तेनो संगालनाचा गाए वा-  
ल्कार क्षेत्रे मे—

**आजम्यं जं पावं, वंशइ मिच्छत्तमंजुओ कोइ ।**

**वयभंगकाऽ मणो, वंशइ तंचेव अद्गुणं ॥१०॥**

अर्थ—गिर्वाल चंगुका क्षाई प्राप्ति बन्दन वर्षते क्षेत्रहुं पाप आवे  
मे ते करतां आड गळुं पाप बन बाग क्षेत्रानुं गन क्षेत्रार आवे. ४०.

बाचार्थ—प्रत चंग इत्यातुं गन क्षेत्रार, गिर्वालीनी उत्तमानी प-  
र्यु तेना पाप करतां आहुगळुं पाप आवे लारे पक्षी वत चंग क्षेत्रार तो  
क्षेत्रहुं पाप आवे ते विचारतातुं के. आगां आशय ओवो रहेवो के के  
वत अद्यु क्षी पक्षी तेनो बाग करतो ते प्रज्ञागनी अव्यंत उव्यानाग-  
या विना बनतु नाही तेया तेनो विचाराती क्षतां पिशेप क्षर्णाय पाप के.  
ओक वेतारीने वेतावरने ना क्षेत्रानो प्रसंग आवे अने "नहा आपु"  
ओवी ओणी ना क्षेत्रे ते निरंतरना दीपालीया करतां क्षेत्री लांगी विद्यु  
निःशंक्ततातुं परिष्याप के तेनु अव्यानाविचारताती आ वार्तुं पर्यु अ-  
द्युगान समाझ राक्षो. आटका गांडेव शर्वागां क्षेत्रहुं के मन अद्यु  
क्षेत्रुं शिराणां नेम अने पापहुं सिंदनी नेम. ओटते वत अद्यु क्ष-  
दी वात शिराण सदृश क्षयरपथ्यु गतातुं. परंतु अद्यु क्षों पक्षी  
पापावागां तो चिंदनी नेटुं शर्वारपथ्यु गतातुं. प्राप्त त्याजे पर्यु मन  
बाग न करतो. ओक जग्गाजे क्षेत्रुं के क्षे-प्राप्तु त्याग करतां तो शापु  
आवर द्वाप चाप के. परंतु वत अंत करतारी तो नहें नहुं पक्षे के  
तेया आसार्यान वरी पर्यंत हुण वोगातुं पक्षे के.

उत्तमी वात तो अद्युत्ते गाए क्षी दो भुविते गाए क्षु उ—

## શાશ્વતસતતરી.

૧૭૮

મુનિના પાંગ મદ્દાવતાં ગતું વતની મુખ્યતા છે. એવીજ મળોભાં અતિ-  
ચાર લાગતારી આયતા કિંબિત વાગ થવાથી પ્રાણિન અદ્યાહિક કરીને  
તેની શુદ્ધ પાપ છે. પરંતુ ચતુર્થ વતને વાગ યારી તો ચરિતો ભૂગ  
થીજ વિનાશ પાપ છે. શાસ્ત્રકારે એવીજ વતને ધાતુ પાત્રની અને ચતુર્થ  
વતને મુક્તાદ્યુતાની ઉપગા આપેલી છે. એટાને ધાતુપત્રનો વિનાશ પૈશે તેને  
ગલાને દૂરને પાણે હનો તેથે પાણ કરી શકતા છે અંગ પરંતુ મેળી ભાયું  
તે કણાં કણે સાણું ચતુર્થ નથી. તેથા ચતુર્થ વત જે અલયર્થ તેના વિ-  
રોધના છે. તેનો વાગ કરનાર કષ્ટદું પાપ બાંધી તે "તત્ત્વવા માટે શાસ્ત્ર-  
કાર ને ગાયાવડે છઠે છે—

સયસહસ્રાણ નારીણ, પિટું ફાડેઝ નિસિઘણો ।

સત્તદુમાસિએ ગમ્ભે, તપફડંતે નિકિતેઝ ॥૧૧॥

તં તસ્સ જચિયં પાવં, તં નવગુણિય મેલિયં હુજ્જા ।

પ્રગિદ્ધિય જોગેણ, સાહુ વંધિજ્જ મેહુણાઓ ॥૧૨॥

**અર્થ—** એક લક્ષ ગર્ભવતી સ્ત્રીઓના નિર્દ્યષ્ટ પેટ ચીરે અને તેમાં  
થી અહાર આનેદા સાત આદ માસના તરફાતા ગર્ભને ગોરી નાથે તે પ્રાણીને  
નેટદું પાપ લાગે તેને નવગણું કરીએ તેટદું પાપ એક સ્ત્રીના ગેઝે ક-  
રને મૈથુન સેવન કરતારી સાણું આવે.

**બાચર્ય-મુનિને વત વાગ કરીને મૈથુન સેવન કરનું તે આતાં પ્રભૂ-**

ગ જગતા શિવાય જને એનું નથી. અને તેથા કંઈ ખંડ આત્માં યાપ  
એ સંભાળીતાર છે.

ઓદા વત વાગ કરનારની પાણે વત નિગાહિયદણ કરતાની પ-  
ણ શાખાં આગા નથી. તે સંલંઘમાં કષ્ટ છે—

અખ્વંડિઅ ચારિતો, વયધારી જો વ હોઇ ગેહથથો

તસ્સ સગાસે દંમણ, વયગહણ સોહિ કરણ ચ ॥૧૩॥

**અર્થ—** અખ્વંડ ચારિતાંત મુનિ આયતા વતધારી અહસ્ય હોય તેની  
રાગીને સગકિત તમા વત અદ્યા કરનું આદેયાય કેવી. ૮૩.

**બાચર્ય-કૃત્તાનેક દુરાયદિગો જની નિગેરેના ભક્ત જની નિગેરનું ગાત  
નવગાતા ગાએ તેની ગાયે પદ્ધતાનાણુ કેવા વાસક્રોષ નખાતનો નિગેરે કરે**

हसने छ. परंतु शास्त्रमां तेने गाए थे कठेकु छ तेनो विचार करता नहीं उपर्युक्त जागागां स्पष्ट पले कठेकु छ के अण्ड भारतिनवंती खाले रागडित प्रत तथा आणेण्य केवा आने तेनो गोग न क्लेणो प्रतधारी थदस्यानी खासे थदणु कठेकु परंतु प्रतया वलण्डिन कृष्णाज्ञाना नी खारे थदणु कठेकु नदी नेंज्ञा पोते प्रत नक्त के तेज्ञा व्याप्तिने वत्तमेण्य करने ओ हेष्टितुंज विपरीत छ. कैपडे दिनी आणेण्य व्याप्तिने शा रीने द्व्यावान करी शकानो दोनो ? द्व्यावान व्याप्तिने गोते प्रतया न करनारा हेष्य के जेट्टितुंज नहीं पणु कठेकाहो वत खारी आरक्षाना के मुनि यदयागाना देपी हेष्य के अने खेते धर्म शुश्रावानु विद्या तुला पावनाना हेष्य के तेनो विचार करवानी नदृ के धर्म शुश्र पाणु कंठ पंश घरपेचा आल्युं आवे तेतुं नवा ते तो शुश्रावा समूदयान भाग उत्तर तेतुं छ. वली पसे द्रव्य सभूक शिवाय गोटी गोटी आडीने गेवे अने गोटी वेपारी छु गोग कठेपणु तेवा कांठ वेपार आली राके नहीं गाए ओतुं जोडुं हांगीकायाथुं धारण्य न करतां शुश्रावनोना वस तरिके वर्तुं, शुश्रावुं बड़ुगाना कठेकु तेनोनी प्रशंसा कर्ती, गोताना आत्माने विचुच्छा संगवर्वो अने अंतःकरण भूर्विक (उपर्युक्त आनंदोने गोताना गाए नहीं) आत्म निंदा करनी ओ तेज्ञातुं कर्तव्य छ. गोग करतारी कांधकायु शुश्रावी प्राप्ति भाज गोग होतो थरो अने वायतपर शुश्र परिज्ञानी वृद्ध थरो तो इरीते प्रतयाणु करतारी आत्मानुं गणु द्व्यायु थरो.

(आगुंग.)

## ओक ग्रन्थ.

श्री वेनवर्षी प्रकाशना अधिपति आडेप।

शुश्रावोना तेहार ब्यर श्री अमरवाहारां आणक समुदयाना आवेन थदस्यो गोताना इता ओतुं तेने लायता इता परंतु इनु युंदी तेने गाए आगवर्ण्य पेतो अदार गेजा नदी तेवी भार वर्ण गोतानारी गोटीग गणु उत्तर रही के शुं ? आ आणतनो खुवासो आपना आढक वर्जने नाण्याना गाए प्रगट फँसो.

उत्तर—जे आणतनो खुवासो श्री आमदावाद शेठ आण्यांदृ क्लास्याना वडीनार करनार प्रतिनाथ सालेपो तरइ पत्र वृणीने गंगासोंगी गोपारी के न गोतारी ते ओजो साहेजानी युनसारी उपर गेवे छ. तांदी.

અર્થાપત્ર.

૧૮૧

## ચરચાપત્ર.

(જૈનમર્મ બાઇઓના પ્રમાણથી થતી ધર્મ કાર્યની હાંતી)

શ્રી જૈનધર્મ પ્રકાશના અધિપતિ સાહેબ!

નામના લક્ષ્મિકાળ આપના પ્રાસિદ્ધ પામેવા ભાસિકગાં દાખલ કર્યાની ગણેદરાનાં કર્યો.

“કું ગુરુંથથી કરાંચી ગયા વર્ણના બાદયદ ગાસમાં ગયેદો કનો લાં આપણું એક ધર દેરાસર સોલનર અન્નરમાં છે તેની અંદર મૂળનાન્દ-કળ શ્રી શાગળાપાર્વિનાથજી છે અને એ બાંનું શેત વર્ષણા એ . (જન વિષય છે. તે દેરાસરજીના સમીક્ષા ગાગમાં ભાવ એક પાઠણના આવકભા-ધાની ફાલ છે અને તે સારી રીતે દેરાસરજીની સાર સંભાળ રહ્યે છે. સોલનર અન્નરમાં ઘીના ડોષ આવકભાઈ રહેતા નથી. કરાંચી અંદરમાં વસ્તી ચાર બાગે વેંચાયેદી છે. સોલનર અન્નર, સદર અન્નર, રણુંડોઽથ-ની લેત અને કરાંચી શેહેર. આવક બાઈઓની પિણેથ વસ્તી રણુંડોઽથની બેનમાં છે. તેને સોલનર અન્નર હુર પડાયાંની દર્શન કર્યા જવાનું પણ સુશીલ જન-ખૂબાથી તેઓઓ ગળાની દેશ પરદેશથી દીપ કરી લાંનીને જોતાને અનુદૂળ પડતી જગ્યાને એક જિન ગંધીર ચિખરાયમ (૩૧૫૦૦) ખરચને અધાનું છે. તે દેરા-સરજી ગાડુ વરણથી તૈયાર થયેલું છે. હેતુ ગાત્ર સોલનર અન્નરમાંની પ્રતિના છ લાંનીને શુભ સુદૂર્દેશના પ્રતિનિધિત કર્યાનુભૂત આશાગાં છે. ગરીના આવકભાઈ ઓટાંચા કુણ્ણ મુખ્ય આગેવાતન દાતા તેમાંના કૃષ્ણાઓએ કુણ્ણરી ગયા છે અને કંચો દાલમાં આગેવાત છે તેમનાગાં ન્યાત નનતની તેમજ અંદર આદરની વીજ અસરથી તિંધા દ્વીપાથી તેઓના નાત દેરાસરજીના પ્રતિના કરવાનું રાંભાસતા ગણ નથી, તૈયાર થયેદો દેરાસરની ડોષ સંભાળ પણ લેતું નથી અને તેથી એક દેવ પિમાન સરખા જિન ગંધીરમાં બગાડ થતો નથ્ય છે તેમજ ગિથા દ્વિતીઓ પણ કૈનીઓની દારી કરે છે. તો તે વાત સર્વે જૈત બંધુંઓને શરમ લગાડે તેસી છે. માટે શ્રી કરાંચીના આવક સમુદ્ધયને ગતી નનતા પૂર્વી જિનની છે કે-તેમજે આ પાયતમાં ડોષ પ્રકારનો વધો લા-નતો ન રહેશે અને જોતાના આગળ પાણીના ને વાંખાઓ હોય તે પણ કેવું જોતાને લાં સારે મારે આપસરે આનુભૂત મુફતાગાં આવે છે તેનું આ

१८२

## श्री कैलासगुरु प्रकाश.

स्वप्ने तो आत्मदिलाक अनें सर्वाङ्ग जगत्प्रिये आवृत्तारब मुक्तार देवदेवी  
अने दिव्यारबुं नेम्बुं के देवंग अने आवृत्त धर्म दर्शन नहीं अने  
भीम करनार लेख के तो नेम्ब देवा देवा नहीं. कर्मी अन देव के तो  
नेम्ब दर्शन आवृत्त देवा नहीं नेम्बों कर्म एवं नामा करनारब मुक्त देव  
आपणार्ही अनी थाई तो कर्म अने न आवृत्त देवों करनारदो नहीं नहीं नहीं  
नहीं गहर करती. आ आवृत्ताने भैरव जोड जगत्पुं दिव देवदु लाली धर्म  
आपा करनीना चरण्यु दिव देवदु ले आदे आशा के उ आ निर्मली  
धूपर नेम्बो लक्ष आपणो. तेव छां वें नेम्बो लक्षनार आने तो आवृ  
देव श्रेणीर्विजेशन जोड उटीआना आजेनान शेद्यो प्रतो नेम्बर धर्म  
पापु जित्यार्ही कैलासाधुंगो प्रत्ये वितंती के तेवणे आ आवृत्त दर्शन  
लाभो नेम्ब अने तेव नाश्वर नवा देवसर्वज्ञां प्राप्तवा यान तेव कर्म  
देवदेवी. उत्तरांगोंक द्वार यद्यद्यो गोने नवा देवसर्वज्ञानानि के तो नेम्बां  
आगां कोंध नेम्बो पुण्य अनी नहीं. वाली आगां अर्गु धर्म नामावे नहीं.  
देवसर्वज्ञ तो देवार के आन प्रतिष्ठ भैरवार निर्मलो अर्गु कर्मां यो  
देव अर्गु हो. आ धारी आवृत्तानी लाग देवाय के आशुं के तां निर्म  
गहिर रथावाणी जग्याने देवायी दों देवाधुंगो इनी धर्म निर्म.  
रेना निरंतर लाग गाली शक्तो अने अन्य गतिओ गशु दांसी कर्ता आ-  
दक्षो जोटों ओक पांचों ने फान थयो. आशा के के आ आवृत्त दर्शनार  
संवेदाणा अथवा तो श्रीम जित्यार्ही कैलासाधुंगा सत्तर लक्षणर वेशो अने  
श्री शामगापापार्णिमाशुभ्रो नवा तपार लिंगागाल डरीने भूत्या अ-  
धना भागीदार यहो.

१८३

जोक अपार.

## वर्तमान समाचार.

( माटुवाणां दीक्षा गहोत्सव.)

मुनिनार भद्रारवी गहिर्यहेन्द्रना दिव्य मुनि देवमित्याद् तथा  
मुनि धर्म विलालक गां जैगांगुं शी लीपारी रवा लवा. ते प्रत्यें नेम्ब-  
ना भोदेश्वरी शापु नीमुन देवाय वाया वल्लभीयांदो देवदेव उत्तान  
थेंगो अर्गु तेंगणे दिल्ला केंपा दिवार नवगुंडों लालावाह गांगु गुनिवारे

## पर्सेमात समाचार.

123

सांख्य विद्यार को अने ते "अनो" आवक्षणे दीक्षा हेवाहुं भुनि धर्मविनय  
ज्ञानी जन्मभूग्नि गहड़ा थांदर देखारी लांना आवक्षणे "आवेद" को  
संवेदे तां हुं महड़ा शेंडेर वेपार देवतारनुं आपातानी भरेहुं छे तां  
दीक्षा गहेत्सव गहुं वर्षे थ्या अधिकृत थोव न देखारी लांना आवक्षणे  
संवेदानी गहुं उत्साह छ्ठो गुवि. इंग विज्ञात. धर्मविनयल तथा इं  
लंग विज्ञात गोसमुही. १५ गे गहूं वधारीं ते वधने लांना आवक्षणे  
गहुं वेल धुमधी सामैयुं कहुं दहुं. दीक्षा देवा धूच्छतारा अने ज्यु  
पायु सावेद छ्ठा. दीक्षाहुं भुदुर्ते आदाशुद र शुभवार हुं. हुं. गोसाह  
१० था गहार गहेत्सव शाह इस्तागां आगो छ्ठो. देवासरलगां सुशोभीत  
गंधार्ह रवना अरी दही. दहेण धूग गगाती दही. अधिकृतीयावाला शेंड  
साधारणगार्ह इत्यादास आनेवा देखारी महेत्सवानी शेवामां सारी पुर्ति  
थधु दही. गोसाह १२ थे वरधीया चावारे तेगबुं धूल भाष्टाती दही.  
गोसाह १३ थे खार वननी धूल भाष्टाती ने ईद्र ईश्वरी ईप्पांहा, गो-  
साह १४ थे अपन दिवा इमारीमो गहेत्सवा क्तिने धंधे इत्याकृती पु-  
ल भाष्टाती दही. गोसाह १० थे अने दीक्षा देवारणोना धुवेक्ष चयागां  
दहा ने तगाग तांडिए तेगज डेवाक अन्यगतिगोजो. पायु वधार्हा  
दहा. यह १३ थे भुनि कमण विज्ञात तथा विगविज्ञात आव्या छ्ठा  
अने गाहाशुही र ने भुनी. उमेद विज्ञात गगु ऐ विज्ञो सांधे वधार्हा  
दहा. भुनीरानना दाचा. ८ शेंडा थन्यां आवक्षणे वर्गाना वित्साहमां वृद्धि थधु  
दही. गाहाशुह रहे दीक्षाहुं भुदुर्ते देखारी शुनी र नी राये आगा शेंडे.  
इमां आवर खापारागो राह वधार्हो छ्ठो. गदारन सर्वनी शेंडीती  
देखारी वेस, जन, चरभा, लांदर तथा तगाग वेपार धंधे रव्वा छ्ठो.  
इरह खापारागो गोत देखारी राह धुश्यारी धम्यो धंधे राख्यो छ्ठो.  
आहुं आवर खलाहुं डेप्पाल वधन अनेहुं रगरखां आवहुं नया.  
आ वधनो दीक्षा देवारा अनेज्ञाने ज्ञेक्तो शेंडेरनी तभान  
वरतीना गन उत्सायगान थ्या छ्ठा. शुह २ जे सवारना उ वागायी  
वरदीडानी तेगारी थना लागी दही साडाहा वागे वरधीयो आव्यो छ्ठो,  
वरधीयानी शेवा आवर्धनीय दही. गहारगामधी धंधे वरधीयानी तथा  
गहेत्सवानी जोआ गाए धुश्यक्ष गागुगो आनेवा छ्ठा. वरधीयानी लंबा-  
म १०८२ न वेंडीये तेव्वा वित्सारगां छ्ठो. शेंडेत्वा तगाम रोह साहुकारो

પરસોપણાં જાગ્યા હો. દીક્ષા કેવારા જુદીના ચાળથીંગા વરસ્ફારી રૂમ  
અંગરી હો. ગૃહિણી કાગણી બાઈ વાવગાં કેળી આંદે કેવા ગરીબાં  
ચાયર વધ્યે ગેડો હો. અંત વાવગાં ગારસીં વલ્લ પણી કેંદ્ર હાં  
લીંગી હો. આંગીની છોટો કેવાના રૂપો ( કેવાના પેંઘાર પેંઘાના  
રૂપો ) રૂપ પાંજાની પિંઘેનું કી ભાગ રૂપ ( દીક્ષા કેવારને ચાયર રૂપ  
જાગાના, અંગી પરસ્યાના વધ્યા ગાડી હંકાના રૂપો ) અને રાગણું દીક્ષા  
કેવાના રૂપો ( દીક્ષા પાંજાને ચાયર રૂપો-એનો કેવાના હો. પરી-  
દીક્ષાનાં પૂર્કા જીવા ઉકાળાં જાગણું હો. હો. વરસ્ફારી આંગીની  
ઉપરાં કોણ વરસ્ફારી પણ ચારી રકમ નાંજાનાં આપી હો. વરસ્ફારી  
જાગણાં સિંગરાં ઇશીની કેંક વાગે કોણદ્વારી હર કેંક વાગ હો. જોંબ  
દીક્ષાની લાં એક વાગ નાંને ગાંધી કોણદ્વારીનું હો. દીક્ષા જાગણાં  
માં આપી હો. નાગ રચણાં યુદ્ધી, દેશોદ્વારાના દીક્ષા યુદ્ધી, દીક્ષા-  
કુદ્ધા ( વૃદ્ધિના ) વધ્યા નિંદોદ્વારાના ( વધ્યા ) ને પાયણે કરવાનાં આપી  
હો. દીક્ષા કેવારના ચંચાંનીંગો લીંગડી, પદાણ વધ્યા વાંદ્રાંગે નિંદોદ્વારાના  
જાગણાં હો. તેથણે પણ યાદાંકિત જાણે આર્દે કોણે હો. દીક્ષા પરદેદી  
ચૂઘારે પદ્દર લસર જાણ્યા વરસોયાં કેંકદું ગાંધું હતું. દીક્ષા કેવાનાં  
સમેન પંગ આવકોણો ગંદોડો ચંદું વન બિયણે હતું અને હો. પાંજ  
ઓંગો પીશસાનકની કોણી કુચરી હતી.

દીક્ષા વાંદ્રાં પણી આજા વાગાં જાયારે આંગીનાં વાણવાનાં ( દીક્ષાના  
ચાયાનાં કેવારનાં હો. દીક્ષા કેવાર વાણાં હો. ) ના વાગાનાં જો  
હો. રૂપ હો. ના. ના. નિંદાનાં વાણવાનાં હો. નિંદાનાં જો  
પાંજાં જાણીની હો. જો કે પાંજાનાં જાણી વાગાનાં જાણી હો.

અંગી કોણોદ્વારાના જાણીની નિંદોદ્વારાના વાણવાનાં જાણીની નિંદો  
ઓદો અને આંગું દીનસની જુદામ ગદી ગઢેને એકંત જાણીની જાણું હતું.

આંગું વર્તે આંગો ગેંગો ગંદેલા જાવાની અંગે અંગે આંગોની ગંદે  
જાણતા કેલાદારે કોણા દીક્ષા આંગોની કેલાદારી અંગું જિનીની હો.  
આંગા ગંદેલાનાં દીક્ષા પ્રદારે લાગ કેવારે પુનરાની પણ દીક્ષા  
કોણે હો ગાડે અંગે કેલાદારુંનીંગે અંગે ચંચાંની ગંદેલાનાં જાણીની વાગ  
હો. જોંગી આંગારી પ્રાર્થના હો.